ॐकार फाउन्डेशन ट्रस्ट

अंक : 21 सहयोग शुल्क : रु.1 सितम्बर : 2018

दिव्यांग सेतु

संपादक : - संतश्री ॐऋषि प्रितेशभाई

जिंदगी की भागदौड़ और उतार-चढ़ाव के बीच भी जिंदगी को बेहतर बनाया जा सकता है, इसके लिए अपने आसपास मौजूद वातावरण को अपनी प्रेरणा बनाइये और जिंदगी को खुशनुमा बनाइये।

- संतश्री ॐऋषि प्रितेशभाई

दिव्यांगजन अपने आप को ना समझे कमजोर, दिखाएं असाधारण काम|

- नरेन्द्र मोदी, प्रधानमंत्री

निरामय हेल्थ पॉलिसी

पात्रता

- केन्द्र सरकार द्वारा चलाई जा रही यह पॉलिसी सेरेब्रल, पाल्सी, ऑटिज्म, मेन्टल रिटार्डेशन, मल्टिपल डिसेबिलिटीसे असरग्रस्त दिव्यांगो को मिल सकती है।
- ४०% अथवा उससे अधिक दिव्यांगता से असरग्रस्त व्यक्ति को इस पॉलिसी का लाभ मिल सकेगा।
- रू. २५०/- बी.पी.एल. एवं रु.५००/- ए.पी.एल. दिव्यांगो के लिए सिंगल प्रीमियम

लाभ

रु. १,००,०००/- तक का इंश्योरेंस मिल सकता है।
(निर्धारित किए हुए फंड के अनुसार)

यह प्रीमियम ॐकार फाउन्डेशन द्वारा भरा जाएगा

आवेदन-पत्र के साथ जमा किए जाने वाले प्रमाण-पत्र/दस्तावेज

सिविल सर्जन का दिव्यांगता दर्शाता प्रमाण-पत्र

(ऊपर बताई गई चार बीमारियों में से किसी भी एक का उल्लेख प्रमाण-पत्र में जरुरी है)

- वर्तमान की पासपोर्ट साइज़ फोटो
- राशनकार्ड की प्रमाणित कोपी
- निवास स्थान का प्रमाण (राशनकार्ड अथवा वोटिंग कार्ड)
- बी.पी.एल. कार्ड (यदि बी.पी.एल. में आते हैं तो)
- बैंक पासबुक की फोटो कोपी (बैंक ISFC कोड के साथ)

संपादकीय

अँधेरे में कुछ ज़िन्दगी होम कर दी,
उजाले में अब ये हवन कर रहा हूँ ।
~ दुष्यंत कुमार

एक बार एक साधु महाराज अपने कुछ दोस्तों के साथ दरिया के किनारे बेठे थे। उनकी नज़र एक बिच्छू पर पड़ी जो पानी में डूब रहा था। हजरत ने उसे डूबने से बचाने के लिए पकड़ा तो उसने डंक मार दिया।

कुछ देर बाद वो दोबारा पानी में जा गिरा, इस बार फिर हज़रत उसे बचाने के लिए आगे बढे, पर उसने फिर डंक मार दिया। चार बार ऐसा ही हुआ। तब एक दोस्त से रहा न गया तो उसने पूछा, महाराज, आपका ये काम हमारी समझ के बाहर है। ये डंक मार रहा है और आप इसे बचाने से बाज़ नहीं आते। उन्होंने बहुत तकलीफ में मुस्कुराते हुए कहा कि जब ये बुराई से बाज़ नहीं आता तो मैं अच्छाई से क्यूँ बाज़ आऊं!

किसी ने सच कहा है की, दुनिया में जब तक एक भी व्यक्ति प्रमाणिक होगा, लोगों की भलाई के बारे में सोचता रहेगा, तब तक इस दुनिया का विनाश नहीं हो सकता।

खुश रहें और लोगों की मदद करते रहें। दिव्यांग सेतु को सराहने हेतु धन्यवाद।

दिव्यांग सेतु
मासिक पत्रिका

सितम्बर : 2018, पृष्ठ संख्या : 16
वर्ष : 02 अंक : 09

प्रेरणास्त्रोत और संपादक

संतश्री ॐऋषि प्रितेशभाई

सह-संपादक

मिहिरभाई शाह

मो. 97241 81999

संपर्क-सूत्र

सेवा समर्पण फाउन्डेशन

ॐकार फाउन्डेशन ट्रस्ट (NGO)

Trust Reg. No. : E/20646/Ahmedabad

००१, ग्राउण्ड फ्लोर, आंगी एपार्टमेन्ट,

अन्नपूर्णा पार्टी प्लाट के सामने,

नया विकासगृह रोड, पालडी,

अहमदाबाद - ३८०००९

मो. 99749 55365, 9974955125

मुद्रक

प्रिन्ट विज़न प्रा. लि.

आंबावाडी बजार, अहमदाबाद-6

079 26405200

दिव्यांगों को यूनिवर्सल कार्ड से देशभर में मिलेगा लाभ

दिव्यांगजन अपने आप को ना समझे कमजोर, दिखाएं असाधारण काम- लोकसभा स्पीकर

दिव्यांगजन अपनेआप को कमजोर न समझें। वे शासन, समाज और परिवार से सहयोग लेकर असाधारण काम कर सकते हैं। दिव्यांग तैराक शरद ने एशियाई खेल में पदक हासिल किया है। नृत्यांगना सुधा चन्द्रन ने कृत्रिम पैर से फिल्मों में असाधारण काम करके दिखाया है। कई दिव्यांग तो एवरेस्ट शिखर पर चढ़ चुके हैं। यह बात सोमवार को लोकसभा स्पीकर सुमित्रा महाजन ने रविंद्र नाट्य गृह में आयोजित कार्यक्रम में कहीं। आयोजन में मौजूद सामाजिक न्याय और अधिकारिता केंद्रीय मंत्री थावरचंद गेहलोत ने कहा कि देश में कहीं से भी दिव्यांग योजनाओं को लाभ ले पाएंगे। इसके लिए यूनिर्वसल कार्ड बनाए जा रहे हैं। देश में २४ राज्यों में काम चल रहा है। म.प्र. और राजस्थान में यह काम सबसे तेजी से चल रहा है।

सामाजिक न्याय और अधिकारिता मंत्रलाय द्वारा एडिप योजना एवं राष्ट्रीय वयोश्री योजना के तहत सहायक उपकरणो के निशुल्क वितरण कार्यक्रम शनिवार को नाट्य गृह में आयोजित हुआ। इस आयोजन में केंद्रीय मंत्री गेहलोत ने कहा कि दिव्यांगजनों के सशक्तिकरण के लिए चार सालों में हमने एक नहीं अनेक एतिहासिक निर्णय लिए हैं। इन चार सालों में छह गिनीज बुक आफ वल्र्ड रिकार्ड बनाए है। पहले इस प्रकार का कोई रिकार्ड नहीं था।

खुद दिव्यांग, दूसरों को दे रहे सहारा

मुजफ्फरपुर : पश्चिमी चंपारण जिले के पिपरासी के एक दिव्यांग ने दूसरों को सहारा देकर मिसाल कायम की है। इनका नाम है नंदलाल सहनी। दरअसल ये युवक-युवतियों को नि:शुल्क सिलाई-कढ़ाई का प्रशिक्षण देते हैं, ताकि वे स्वरोजगार की ओर उन्मुख हो सकें। उनसे प्रशिक्षण प्राप्त कर दर्जन भर युवा आत्मनिर्भर बन चुके हैं। पिपरासी पंचायत के खैरा टोला निवासी नंदलाल सहनी ने दिव्यांगता को कभी अभिशाप नहीं समझा। उन्होंने तय किया कि वे दूसरों पर बोझ बनने की जगह स्वावलंबी बनेंगे। उन्होंने सिलाई का प्रशिक्षण प्राप्त किया और खुद का सिलाई सेंटर खोल लिया। कुछ ही महीनों में लोग उनकी कारीगरी के मुरीद हो गए। इस बीच नंदलाल ने सोचा कि उनके जैसे कई अन्य युवा बेरोजगारी का दंश झेल रहे हैं। फिर क्या था, उन्होंने सिलाई सेंटर पर ही प्रशिक्षण देना शुरू कर दिया। बिहार-यूपी की सीमा पर बसे उनके गांव में यूपी से भी युवा सिलाई का प्रशिक्षण लेने के लिए आते हैं। अब तक दो दर्जन से अधिक युवाओं ने उनसे प्रशिक्षण प्राप्त कर खुद का सेंटर खोल लिया है। इस प्रशिक्षण के एवज में नंदलाल किसी से रुपये नहीं लेते हैं।

हुनर से बनाई पहचान

उत्तर प्रदेश के सीमावर्ती जरार गांव माघी कोठिलवा, कटाई भरपुरवा समेत अन्य गांवों में नंदलाल अपने हुनर के दम पर पहचाने जाते हैं। इन गांवों के दर्जनों युवकों को सिलाई का प्रशिक्षण देकर उसे इस काबिल बना दिया कि लोग खुद रोजगार कर अपने पैरों पर खड़े हैं। परसौनी गांव निवासी सुभाष गिरी ने बताया कि मेरी पुत्री उषा कुमारी ने करीब छह माह नि:शुल्क प्रशिक्षण प्राप्त किया है। अब वह घर पर ही सिलाई करती है। परसौनी गांव

पश्चिमी चंपारण जिले के पिपरासी के एक दिव्यांग ने दूसरों को सहारा देकर मिसाल कायम की है।

निवासी इदरीश मियां के पुत्र मुमताज अंसारी प्रशिक्षण लेकर अरब सिलाई करने के लिए चला गया है।बगल की सौरहा पंचायत के भिलोरवा टोला निवासी ठग साहनी के दो पुत्रों ने भी यहां प्रशिक्षण लेकर सिलाई का कारोबार शुरू कर दिया है । ठग साहनी ने बताया कि मेरे दोनों पुत्र अच्छी खासी कमाई करते हैं। खैरा टोला निवासी राम अवध यादव की पुत्री रूना कुमारी में भी प्रशिक्षण प्राप्त किया है। उत्तर प्रदेश के जरार गांव निवासी लालबाबू ,सरफुद्दीन, गुलशन तथा पिपरासी पंचायत के अनिल यादव, धनंजय यादव आदि दर्जनों युवक-युवतियों ने भी प्रशिक्षण लिया है। दिव्यांग श्री साहनी ने अपने मेहनत के बल पर 4 सिलाई मशीन खरीदी है। सरपंच दिनेश्वर तिवारी ने कहा कि इनके जज्बे को मैं सलाम करता हूं। पंस सदस्य यशवंत नारायण यादव ने कहा कि इनका कार्य सामाजिक दृष्टिकोण से बेहतर है। पंचायत की मुखिया उर्मिला देवी ने बताया कि इन्हें दिव्यांगता प्रमाण पत्र के आधार पर सामाजिक सुरक्षा पेंशन मुहैया कराया जा रहा है। बीडीओ, बीके राम ने बताया कि

नंदलाल सहनी को सरकारी मदद दिलाने का प्रयास किया जाएगा। वास्तव में वे समाज के लिए अच्छा काम कर रहे हैं। उनसे अन्य लोगों को भी प्रेरणा लेनी चाहिए।

भारतीय दिव्यांग क्रिकेट टीम को किया सम्मानित

भारतीय दिव्यांग क्रिकेट टीम को ब्लू बेल्स ग्रुप ऑफ स्कूल की ओर से सम्मानित किया गया। हाल ही में श्रीलंका के साथ हुए टी-20 मुकाबलों में जीत हासिल करने पर सेक्टर-10 स्थित ब्लू बेल्स पब्लिक स्कूल में खिलाड़ियों को चेक देकर सम्मानित किया गया।

इस दौरान स्कूल परिसर में मैच भी खेला गया। इसके बाद भारतीय दिव्यांग क्रिकेट टीम ने बच्चों के साथ अपने क्रिकेट अनुभवों को साझा किया। भारतीय नि:शक्तजन क्रिकेट टीम के कप्तान रविंदर पाल ने कहा, मैं ब्लू बेल्स स्कूल के समर्थन और उनके प्यार का आभारी हूं। एक दुर्घटना के दौरान बचपन में मैंने अपना हाथ खो दिया, लेकिन निराश न होकर मैंने खुद पर विश्वास रखा और हमेशा यही आशा की कि मैं अपने जीवन के लक्ष्य को हर हाल में प्राप्त करूंगा। स्कूल की निदेशिका डॉ. सरोज सुमन गुलाटी ने कहा कि हमें भारतीय नि:शक्तजन की विजेता क्रिकेट टीम का स्वागत करके बेहद खुशी हो रही है। ये मैच श्रीलंका और भारत के बीच थे और भारतीय टीम ने इस शृंखला को 2-1 से जीता। क्रिकेट टीम ने अब तक 34 मैच खेले हैं और अधिकांश मैचों में जीत हासिल की है, जिसमें 2015 में पहले एशिया कप क्रिकेट टूर्नामेंट की शानदार जीत भी शामिल है।

रेल्वे में सबसे ज्यादा दिव्यांग हैं इस कैरेज वर्कशॉप में

तकनीकी और कलपुर्जों की मरम्मत करते हैं ये दिव्यांग रेलकर्मी...

भावनगर कैरेज रिपेयर वर्कशॉप संभवत: रेलवे में देश का ऐसा वर्कशॉप है, जहां सबसे ज्यादा दिव्यांग ड्यूटी कर रहे हैं। इस वर्कशॉप में 62 दिव्यांग कर्मचारी हैं, जिसमें 39 कर्मचारी तकनीकी कार्यों से जुड़े हैं। वहीं 32 ऐसे दिव्यांग कर्मचारी हैं जो कलपुर्जों की मरम्मत करते हैं।

मुख्य कारखाना प्रबंधक आर.बी. विजयवर्गीय के मुताबिक वर्कशॉप में इन कर्मचारियों को ब्रेक हेड की मरम्मत, ब्रेक रिंगिंग लीवर मरम्मत, इक्वालाइजिंग स्टे रिपेयर, बोगी पुर्जा सामग्री छंटाई, बोल्स्टर सस्पेंशन स्प्रिंग हैंगर गेजिंग, पेन्ट, एंकर लिंक रिपेयर, बोगी के पुर्जों की रंगाई और पैलेट में बोगी पुर्जों की जिम्मेदारी दी गई है। कर्मचारियों को सेफ्टी, जूत, हेलमेट एवं दस्ताने समेत सुरक्षा उपकरणों के अलावा औजार दिए गए हैं। इसके अलावा इन कर्मचारियों को दिक्कत नहीं हो इसके लिए कुर्सियां भी उपलब्ध कराई गई। वहीं एक स्थान से दूसरे स्थान पर जाने के लिए वाहनों की भी सुविधा मुहैया कराई गई है। सेक्शन इंचार्ज इन कर्मचारियों की मदद में रहते हैं।

ये कर्मचारी एक जगह बैठकर आसानी से कार्य कर सकें इसके लिए उनको ऐसी जिम्मेदारी सौंपी गई है। रेल प्रशासन हमेशा ही इन रेलकर्मियों का हौसला बढ़ाने के लिए सहायता मुहैया कराता है।

पक्षियों और प्राणियों के बनाए कटआउट

इन कर्मचारियों की विशेषता यह है कि उन्होंने वर्कशॉप के फेंसिंग की रंगाई और शीट मेटल के कटआउट कर अलग-अलग प्राणियों और पक्षियों के मॉडल बनाए हैं, जो वर्कशॉप के बगीचों में आकर्षण का केन्द्र हैं। अब तक इनके कार्यों से विफलता की एक भी शिकायत नहीं मिली। साथ ही उनकी कार्यशैली, सामग्री को अलग करना और कार्यस्थल पर ये साफ-सफाई का भी विशेष ध्यान रखते हैं।

11 साल से कोई सीरीज नहीं हारी यह भारतीय क्रिकेट टीम,

फिर भी BCCI की नजर में नहीं है हीरो

भारतीय दिव्यांग क्रिकेट टीम श्रीलंका को टी-20 सीरीज में 2-1 से पछाड़ने के बाद गुरुवार को नोएडा स्थित अमर उजाला के ऑफिस पहुंची। टीम के साथ यहां उनके सीईओ प्रदीप अग्रवाल, टीम मेंटर आशीष श्रीवास्तव, फाउंडर हारुन राशिद और कोच अपरूप चक्रबर्ती भी आए। इस दौरान उन्होंने अमर उजाला के साथ टीम की उपलब्धियों को लेकर विस्तार से बातचीत की।

भारतीय दिव्यांग क्रिकेट टीम के कप्तान रविंद्र कंबोज

ने बताया कि उनकी टीम में एक से बढ़कर एक बेमिसाल खिलाड़ी हैं, जो किसी भी वक्त मैच का रुख पलटने का दम रखते हैं। श्रीलंका की मेजबानी में खेली गई हालिया तीन मैचों की टी-20 सीरीज के फाइनल मुकाबले में भारतीय टीम ने बड़े अंतर से जीत दर्ज करते हुए अपनी प्रतिभा को लोहा पूरी दुनिया में मनवाया।

भारतीय क्रिकेट टीम ने श्रीलंका को फाइनल मैच में छह विकेट से रौंदते हुए खिताब पर 2-1 से कब्जा जमाया। निर्णायक मुकाबले में पहले बल्लेबाजी करने उतरी श्रीलंका की पूरी टीम 19.4 ओवरों में 123 रन बनाकर ही ऑलआउट हो गई। भारत ने 124 रनों के लक्ष्य को 12.3 ओवरों में महज चार विकेट खोकर हासिल कर लिया। भारतीय कप्तान रविंद्र कंबोज के शानदार प्रदर्शन के लिए उन्हें मैन ऑफ द मैच चुना गया। उन्होंने फाइनल में चार विकेट चटकाए थे।

भारत की ओर से ओपनर बल्लेबाज बलराज ने 47, टिक्का ने 33, गुलामदीन ने 18 और कैलाश ने 17 रन जड़कर टीम की जीत में अहम भूमिका निभाई। सभी मुकाबलों में बेहतर प्रदर्शन करने वाले बलराज को मैन ऑफ द सीरीज चुना गया। टीम के फाउंडर हारुन राशिद ने बताया कि उनकी टीम की यह कोई पहली बड़ी उपलब्धि नहीं है। इससे पहले भी यह टीम अंतरराष्ट्रीय खिताब अपने नाम कर चुकी है।

खास बात यह है कि पिछले 11 सालों से 26 अंतरराष्ट्रीय सीरीज खेल चुकी इस टीम ने सभी में जीत दर्ज की है। इस दौरान इस टीम ने करीब 80 में से 72 मैच जीते। भारतीय क्रिकेट टीम ने एशिया कप में भी अपनी ताकत पूरी दुनिया को दिखाई थी। एशिया कप में भारत ने पाकिस्तान समेत श्रीलंका, नेपाल, बांग्लादेश और अफगानिस्तान को बुरी तरह धोया था। हालांकि भारतीय दिव्यांग टीम को 25,000 करोड़ रुपये सालाना कमाने वाली बीसीसीआई की तरफ से अब तक कोई मदद नहीं मिली है।

दिव्यांग के लिए कार्य करने वालों को 11 श्रेणी में मिलेंगे पुरस्कार, मांगे आवेदन

सामाजिक न्याय व अधिकारिता विभाग द्वारा दिव्यांगों के लिए उल्लेखनीय काम करने वाली विभिन्न संस्थाओं कर्मचारियों और सामान्य वर्ग के व्यक्तियों को पुरस्कार मिलेगा। पुरस्कार के लिए विभाग ने आवेदन मांगे हैं जो तीन अगस्त तक विभाग को जमा करवाए जा सकते हैं। निशक्तजनों के क्षेत्र में उल्लेखनीय काम करने वाले व्यक्तियों, सरकारी कार्मिकों, विभिन्न संस्थाओं और दिव्यांग को विश्व दिव्यांग दिवस पर सम्मानित किया जाएगा। पुरस्कार 11 श्रेणियों में प्रदान किए जाएंगे। इसमें सर्वोत्तम दिव्यांग कर्मचारी, सर्वोत्तम नियोक्ता, प्लेसमेंट अधिकारी या एजेंसी, दिव्यांग, दिव्यांग के लिए काम करने वाली संस्थाओं, कार्यरत सर्वोत्तम व्यक्ति या संस्था, रोल मॉडल, सर्वोत्तम एक्सपेरिमेंट करने वाला, दिव्यांग के लिए बाधा मुक्त वातावरण का निर्माण करने वाला, सर्जनशील दिव्यांग, दिव्यांग बालक, वेबसाइट व दिव्यांग खिलाड़ियों समेत अन्य कैटेगरी में पुरस्कार प्रदान किए जाएंगे। पुरस्कार के लिए आवेदन 3 अगस्त तक विभाग को जमा कराए जा सकते हैं।

दिव्यांग मतदाताओं को बूथ पर मिलेगी व्हील चेयर

चुनाव आयोग दिव्यांगों को मतदान के लिए परेशानियों से न जूझना पड़े, इस पर विचार कर रहा है आयोग दिव्यांगों के लिए घर से मतदान, गाड़ी की सुविधा, ब्रेल लिपि और पोस्टल बैलेट जैसी सुविधा दे सकता है दिव्यांगों को लाइन में न लगना पड़े इसके लिए सुबह तय समय से पहले भी मतदान करवाया जा सकता है आयोग की प्राथमिकता है कि दिव्यांगों के मत पूरी तरह से सुरक्षित हों और सुरक्षा व्यवस्था में कोई चूक न रहे।

चुनाव आयोग दिव्यांगों के लिए मतदान की व्यवस्था आरामदेह बनाने के लिए कुछ नए कदम उठा सकती है। आयोग शारीरिक रूप से अक्षम व्यक्तियों के लिए मतदान केंद्र तक आने और लाइन में लगने की परेशानी से बचने के लिए दूसरे वैकल्पिक माध्यमों पर विचार कर रही है। घर पर मतदान, पोस्टल वोट, मोबाइल पोलिंग स्टेशन और आने-जाने के लिए ट्रांसपॉर्ट की व्यवस्था करने जैसे उपायों पर आयोग विचार कर रहा है। इसके साथ ही मतदान केंद्र पर दिव्यांगों के लिए जल्दी मतदान करने और अग्रिम मतदान शुरू करने के उपाय शामिल हैं।

लाइन में लगने और इंतजार करने की परेशानी दिव्यांगों को न उठानी पड़े इसके लिए चुनाव आयोग मतदान शुरू होने से पहले दिव्यांगों के लिए वोटिंग की व्यवस्था करने के विकल्प पर विचार कर रहा है। शारीरिक अक्षमता वाले व्यक्तियों के लिए पोस्टल बैलेट का प्रयोग भी किया जा सकता है। इसके साथ ही हर निर्वाचन क्षेत्र में दिव्यांगों को मतदान केंद्र तक लाने के लिए विशेष वाहन का इंतजाम और मोबाइल पोलिंग स्टेशन बनाने जैसे विकल्प भी चुनाव आयोग की नजर में हैं।

चुनाव आयोग को इन विशेष सुविधाओं को इस्तेमाल करने के लिए चुनाव नियमों में कुछ संशोधन करने होंगे। चुनाव आयोग की प्रतिबद्धता है कि मतों की पूरी सुरक्षा और निष्पक्षता का ख्याल रखते हुए ऐसे कदम उठाए जाएं ताकि अधिक से अधिक लोगों को मतदान की प्रक्रिया में भागीदार बनाया जा सके। पिछले सप्ताह ही चुनाव आयोग ने इस दिशा में कुछ बड़ी घोषणाएं की हैं।

किरण रिजिजू ने दिव्यांग BSF जवानों को किया सम्मानित

700 किमी. साइकिल पर सफर तय करके पहुंचे थे मनाली

मनाली: केंद्रीय गृह राज्य मंत्री किरण रिजिजू ने बी.एस.एफ. के दिव्यांग जवानों को सम्मानित किया और उनके साथ स्वतंत्रता दिवस की खुशियां मनाईं। 2 दिवसीय दौरे के दौरान राज्य मंत्री ने शिमला से मनाली पहुंचे दिव्यांग जवानों संग साइकिल रैली में भी भाग लिया। मंत्री ने आर्मी कैंट पलचान से पर्वतारोहण स्थल तक साइकिल भी चलाई।

उन्होंने कहा कि देश के सभी सीमावर्ती क्षेत्रों को सुदृढ़ करने के लिए प्लान तैयार कर लिया गया है। उन्होंने कहा कि भारत सरकार सभी परिस्थितियों को ध्यान में रखकर सीमाओं को सुदृढ़ कर रही है। उन्होंने कहा कि केंद्र सरकार प्रयास कर रही है कि रोहतांग सुरंग को समय पर तैयार किया जाए ताकि लाहौल के लोगों सहित सीमा पर बैठे प्रहरियों तक आसानी से पहुंचा जा सके।

उन्होंने कहा कि रोहतांग दर्रे के बाद बारालाचा ओर तांगलंगला दर्रे पर भी सुरंग बनाने की तैयारी शुरू कर दी है, साथ ही कारगिल तक पहुंचने के लिए शिंकुला में भी सुरंग का निर्माण किया जाएगा। बी.एस.एफ. के जवान दिव्यांग होते हुए 700 किलोमीटर का सफर तय कर मनाली केपलचान पहुंचे और पलचान में तिरंगा फहराया। बी.एस.एफ . के इन हिम्मतवर 36 जवानों को मुख्यमंत्री जयराम ठाकुर ने 5 अगस्त को शिमला से हरी झंडी देकर रवाना किया था। मनाली एस.डी.एम. रमन घरसंगी ने बताया कि अजय देवगन और जिम्मी शेरगिल ने मनाली में तिरंगे को सलामी दी।

छत्तीसगढ में है 6.5 लाख दिव्यांग, सर्वे के बाद होंगे 23 लाख

केंद्र सरकार ने 2016 में निशक्तजन अधिनियम पारित किया। इस पर अमल करने के मामले में छत्तीसगढ़ अव्वल है। प्रदेश को दिव्यांगों के लिए बेहतर काम करने के लिए दो बार राष्ट्रीय पुरस्कार मिल चुका है। छत्तीसगढ़ में 2011 की जनगणना के अनुसार करीब साढ़े छह लाख दिव्यांग हैं।

अब दिव्यांगों की नई श्रेणियों को भी इसमें शामिल किया जा रहा है। पहले तीन श्रेणियां थीं, अब बढ़कर कुल 21 श्रेणियां हो जाएंगी। दिव्यांगों का पूरे प्रदेश में डोर टू डोर सर्वे किया जा रहा है जो अंतिम चरण में है। सर्वे के बाद दिव्यांगों की संख्या करीब 23 लाख होने की उम्मीद है।

अधिनियम लागू होने के पहले भी छत्तीसगढ़ सरकार दिव्यांगों की बेहतरी का काम कर रही थी। 2009 में राष्ट्रीय पुरस्कार भी मिला था। अधिनियम लागू होने के बाद केंद्र सरकार ने चार फीसद आरक्षण की घोषणा की तो राज्य सरकार ने तीनों

श्रेणियों के लिए दो-दो फीसद आरक्षण यानी कुल छह फीसद आरक्षण लागू कर दिया।

समाज कल्याण विभाग के अफसरों ने बताया कि आरक्षित श्रेणी में दिव्यांगों की भर्ती के लिए राज्य सरकार लगातार विशेष भर्ती अभियान चला रही है। अब तक तीन श्रेणियों, दृष्टि बाधित, अस्थि बाधित और श्रवण बाधित को आरक्षण का प्रावधान था। अब केंद्र सरकार ने मानसिक दिव्यांगता की दो अन्य श्रेणियों को भी इसमें जोड़ दिया है। राज्य सरकार ने दो अन्य श्रेणियों के लिए अलग से एक फीसद आरक्षण का प्रावधान लागू किया है।

यह सिर्फ छत्तीसगढ़ में ही किया गया है। प्रदेश में दिव्यांगों की मदद के लिए नि:शक्तजन वित्त विकास निगम की स्थापना की गई है। निगम दिव्यांगों को स्वरोजगार स्थापित करने के लिए आर्थिक सहायता उपलब्ध कराता है।

नौकरियों में आरक्षण के साथ ही दिव्यांगों को हाउसिंग बोर्ड में मकान लेने में भी छह फीसद आरक्षण मिलता है। नगर निगम और नगर पालिका जब अपनी दुकानों की नीलामी करते हैं तो उसमें भी दिव्यांगों को उतना ही आरक्षण दिया जाता है। अब इन सबमें भी आरक्षण छह से बढ़कर सात फीसद हो जाएगा। सरकार दिव्यांगों को उद्योग स्थापित करने के लिए भी मुफ्त जमीन से लेकर वित्तीय सहायता भी उपलब्ध करा रही है।

दिव्यांगों की समस्याओं और शिकायतों के त्वरित निवारण के लिए छत्तीसगढ़ में आयुक्त नि:शक्तजन न्यायालय की भी स्थापना की गई है। दिव्यांग अपनी किसी भी समस्या या शिकायत को लेकर न्यायालय आ सकते हैं। उनके मामलों का यहां तुरंत निपटारा किया जाता है। दिव्यांगों की समस्या की शिकायत आमजन भी कर सकते हैं।

राज्य सरकार ने नियम तय कर दिया है कि अब जो नए सरकारी और सार्वजनिक भवन बनेंगे वहां रैंप, विशेष टॉयलेट आदि का इंतजाम करना जरूरी होगा। भवनों का नक्शा तभी पास होगा जब वह दिव्यांगों के लिए बाधारहित होगा। राजधानी रायपुर के पुराने भवनों को बाधारहित बनाने के लिए केंद्र सरकार ने 21 करोड़ रुपये मंजूर किए हैं। पहली किस्त में साढ़े छह लाख रुपये जारी भी हो चुके हैं।

आस्था, एचआईवी व 55 साल आयु के साथ दिव्यांग सहित 32 श्रेणियों के लोगों को भी अब सस्ते दर पर मिलेगा राशन

राजस्थान की कुल आबादी में से करीब 70 फीसदी लोगों को राज्य सरकार किसी न किसी बहाने सस्ता राशन उपलब्ध कराने की योजना पर काम कर रही है। सबसे बड़ा बदलाव यह होने जा रहा है कि अब राज्य के विशेष श्रेणी और सामाजिक कुरीतियों से पीड़ित 32 तरह के लोग भी राष्ट्रीय खाद्य सुरक्षा योजना में पात्र घोषित किए गए हैं। इनमें आस्था, एचआईवी, सिलिकोसिस जैसी बीमारियों से पीड़ितों को तो शामिल किया ही गया है साथ ही 55 साल आयु प्राप्त वरिष्ठ नागरिक जो दिव्यांग भी हैं सहित अन्य श्रेणियों को सस्ते राशन के लिए पात्र घोषित किया गया है। इसके साथ ही यह पहली बार है कि ट्रांसजेंडर के लिए भी पात्रता श्रेणी बनाई गई है। राज्य में अब किन्नर भी राशन की दुकान से सस्ती दर पर राशन ले सकेंगे। इनको भी एनएफएसए में विशेष श्रेणी की पात्रता प्रदान की गई है।

विभाग के सूत्रों से मिली जानकारी अनुसार जुलाई से राजस्थान राज्य में व्यवस्था शुरू हो चुकी है कि खाद्य सुरक्षा योजना के तहत पात्र कोई भी व्यक्ति राज्य की किसी भी दुकान से राशन ले सकता है। अब केंद्र सरकार की ओर से पूरे देश में किसी भी राज्य के किसी भी डीलर के पास से राशन लेने की योजना को मूर्त रूप दिया जा रहा है। दिसंबर माह तक संभवतया यह सुविधा शुरू हो जाएगी। इससे देशभर के करोड़ों पात्र परिवारों को इसका देशभर में लाभ मिलेगा।

हीमोफीलिया: जब शरीर से ख़ून निकलना बंद नहीं होता

क्या है हीमोफीलिया

ये एक आनुवांशिक बीमारी है जिसमें ख़ून का थक्का बनना बंद हो जाता है। जब शरीर का कोई हिस्सा कट जाता है तो ख़ून में थक्के बनाने के लिए ज़रूरी घटक खून में मौजूद प्लेटलेट्स से मिलकर उसे गाढ़ा कर देते हैं। इससे ख़ून बहना अपने आप रुक जाता है।

जिन लोगों को हीमोफीलिया होता है उनमें थक्के बनाने वाले घटक बहुत कम होते हैं। इसका मतलब है कि उनका ख़ून ज़्यादा समय तक बहता रहता है।

गंगाराम अस्पताल में मेडिसिन कंसल्टेंट डॉ. अतुल गोगिया बताते हैं, ''ये बीमारी अधिकतर आनुवांशिक कारणों से होती है यानी माता-पिता में से किसी को ये बीमारी होने पर बच्चे को भी हो सकती है। बहुत कम होता है कि किसी और कारण से बीमारी हो।''

''हीमोफीलिया दो तरह का होता है। हीमोफीलिया 'ए' में फैक्टर 8 की कमी होती और हीमोफीलिया 'बी' में घटक 9 की कमी होती है। दोनों ही ख़ून में थक्का बनाने के लिए ज़रूरी हैं।''

डॉ. अतुल का कहना है कि ये एक दुर्लभ बीमारी है। हीमोफीलया 'ए' का 10 हज़ार में से एक मरीज़ पाया जाता है और 'बी' के 40 हज़ार में से एक, लेकिन ये बीमारी बहुत गंभीर है और इसे लेकर जागरूकता बहुत कम है।

हीमोफीलिया के लक्षण

इसके लक्षण हल्के से लेकर बहुत गंभीर तक हो सकते हैं। ये ख़ून में मौजूद थक्कों के स्तर पर निर्भर करता है। लंबे समय तक रक्तस्राव के अलावा भी इस बीमारी के दूसरे लक्षण होते हैं।

- नाक से लगातार ख़ून बहता है।
- मसूड़ों से ख़ून निकलता है।
- त्वचा आसानी से छिल जाती है।
- शरीर में आंतरिक रक्तस्राव के कारण जोड़ों में दर्द होता है।

कई बार हीमोफीलिया में सिर के अंदर भी रक्तस्राव होता है। इसमें बहुत तेज़ सिरदर्द, गर्दन में अकड़न होती उल्टी आती है। इसके अलावा धुंधला दिखना, बेहोशी और चेहरे पर लकवा होने जैसे लक्षण भी होते हैं। हालांकि, ऐसा बहुत कम मामलों में होता है। हीमोफीलिया के तीन स्तर होते हैं। हल्के स्तर में शरीर में थक्के के बनाने वाले घटक 5 से 50 प्रतिशत तक होते हैं। मध्यम स्तर में ये घटक 1 से 5 प्रतिशत होते हैं और गंभीर स्तर के 1 प्रतिशत से भी कम होते हैं।

ये बीमारी बच्चे के जन्म से भी हो सकती है। कई बार जन्म के बाद ही इसका पता चल जाता है। अगर हीमोफीलिया मध्यम और गंभीर स्तर का है तो बचपन में आंतरिक स्राव के चलते कुछ लक्षण सामने आने लगते हैं।

लेकिन, गंभीर स्तर के हीमोफीलिया में खतरा बहुत ज्यादा होता है। कहीं ज़ोर से झटका लगने पर भी आंतरिक रक्तस्राव शुरू हो सकता है।

लेकिन, अगर बीमारी हल्के स्तर की है तो इसका आसानी से पता नहीं चल पाता। अमूमन जब बच्चे का दांत निकलता है और ख़ून बहना बंद नहीं होता तब इस बीमारी का पता चल पाता है।

कई बार घुटने में चोट लगती है और ख़ून अंदर ही जम जाता है जिससे घुटने में सूजन आ जाती है।।।

क्या है इलाज

एक समय पहले हीमोफीलिया का इलाज मुश्किल था, लेकिन अब घटकों की कमी होने पर इन्हें बाहर से इंजेक्शन के ज़रिये डाला जा सकता है। अगर बीमारी की गंभीरता कम है तो

दवाइयों से भी इलाज हो सकता है।

अगर माता या पिता को ये बीमारी है तो उनसे बच्चे में आने की संभावना होती है। ऐसे में पहले ही इसकी जांच कर ली जाती है।

वहीं, भाई-बहन में से किसी एक को है, लेकिन दूसरे में उस समय इसके लक्षण नहीं है तो आगे चलकर भी ये बीमारी होने की आशंका बनी रहती है।

डॉ. अतुल बताते हैं कि ज्यादातर मामलों में घटक 8 की कमी पाई जाती है। ऐसे में पहले पता लगाया जाता है कि शरीर में किस घटक की कमी है। अब बाजार में इस तरह के घटक उपलब्ध हैं इसलिए बीमारी का इलाज आसान हो गया है। समय पर इसका पता चल जाने पर इंजेक्शन देकर इलाज हो सकता है।

वॉइस टू
दिव्यांग

ॐकार फाउन्डेशन ट्रस्ट

अहमदाबाद के मनोदिव्यांग बच्चों का मलेशिया में धमाकेदार पर्फोर्मन्स

नवजीवन चेरीटेबल ट्रस्ट संचालित डॉ. हरिकृष्ण डाह्याभाई स्वामी मनोदिव्यांग बच्चो की पाठशाला के १२ विद्यार्थियों और ३ शिक्षक ने मलेशिया में आयोजित NGO & CSR समिट-2018 में भाग लिया था। विद्यार्थियों ने हनुमान चालीसा और आर्मी थीम पर अपना परफोर्मेंस दे कर वहाँ पर हाजिर ७ देश और १०० के करीब NGOके डेलीगेट्स के दिल जीत लिए। कार्यक्रम में उपस्थित मलेशिया के सांसद श्री Charles Santiago ने भी विद्यार्थियो से मिल कर सब का अभिवादन किया।

पाठशाला के विद्यार्थियो ने वहां के PM-House, K. L.Tower और Twin Towers की मुलाकात की। Twin Towers में टॉप लेवल पर पहुँचने की सिध्धि से टावर्स मैनेजमेंट की तरफ से ग्रुप फोटो और अचीवमेंट सर्टिफिकेट भी दिया गया। विद्यार्थियो ने जेंटिंग हिल स्टेशन की मुलाकात कर के जुरासिक पार्क और होरर पार्क जैसे एडवेंचर्स में भी हिस्सा लिया।